

पांच मई का उत्सव



लिंडा लोवी

चित्र: बारबरा नटसन

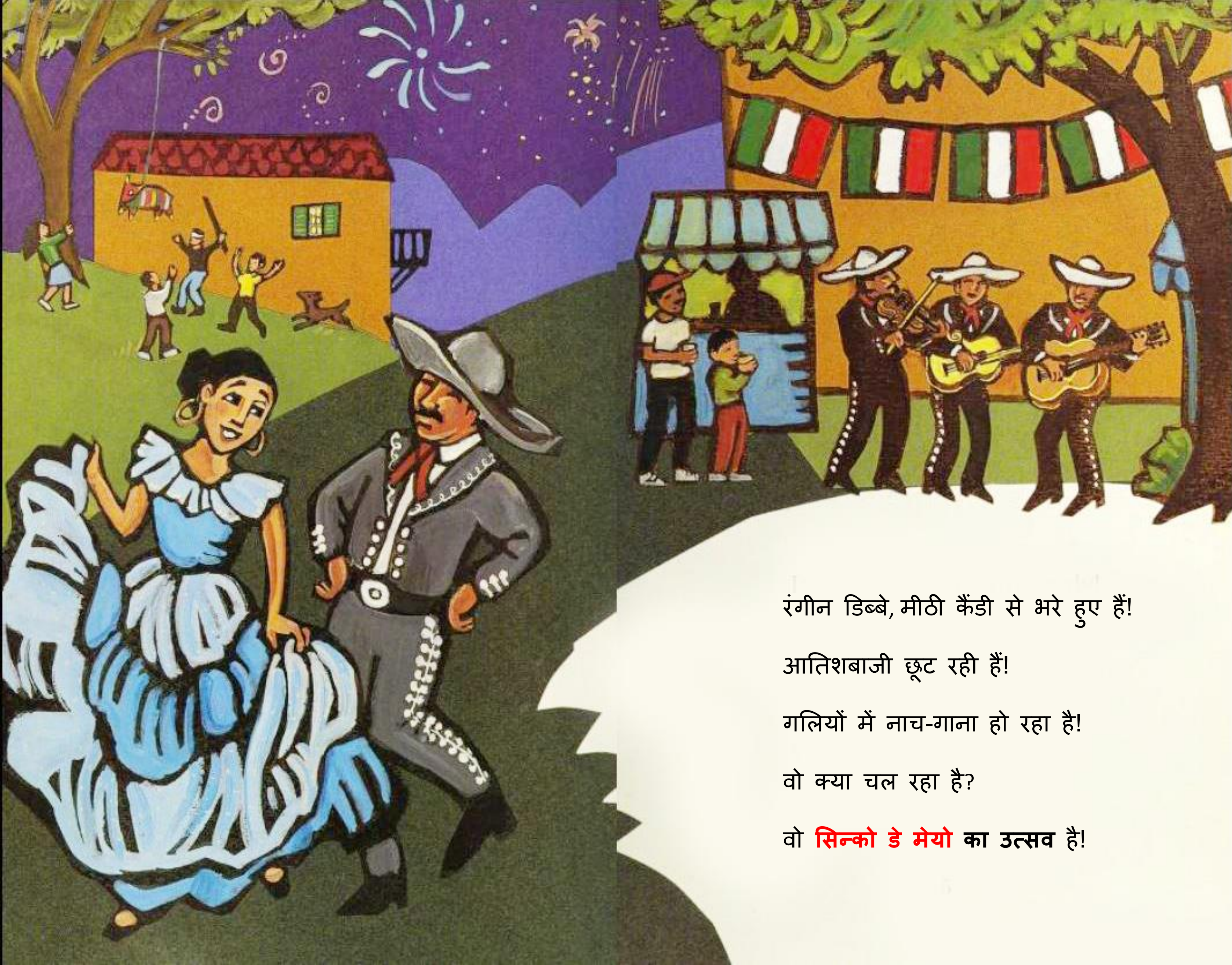
पांच मई का उत्सव



लिंडा लोवी

चित्र: बारबरा नटसन





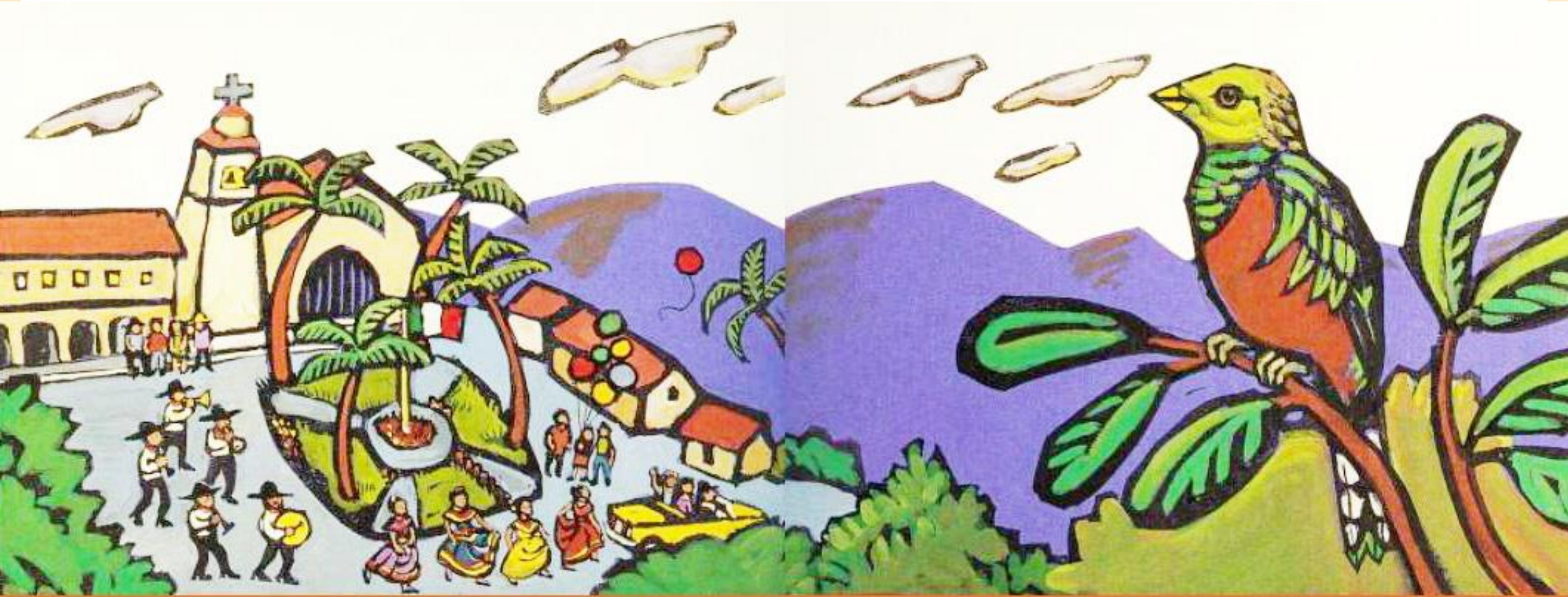
रंगीन डिब्बे, मीठी कैंडी से भरे हुए हैं!

आतिशबाजी छूट रही हैं!

गलियों में नाच-गाना हो रहा है!

वो क्या चल रहा है?

वो **सिन्को डे मेयो का उत्सव** है!



सिन्को डे मेयो (Cinco de Mayo) मई का पाँचवाँ दिन है.

अमेरिका और मेक्सिको में, वो एक उत्सव का दिन है.

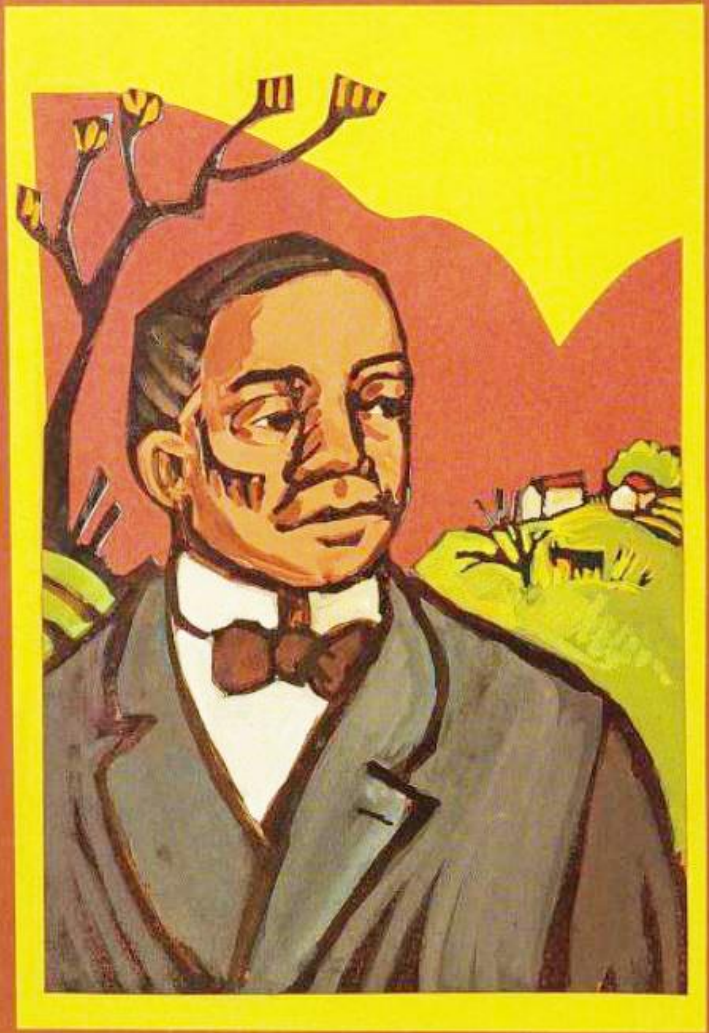
उस उत्सव के दिन, हर कोई जश्न मनाता है.

सिन्को डे मेयो तब घटता है जब लोग उस अद्भुत लड़ाई को याद करते हैं जो 100 साल से भी पहले घटी थी.

सिन्को डे मेयो की कहानी, एक साहस की कहानी है.

वो मेक्सिको के सैनिकों की कहानी है जिन्होंने धरती की सबसे ताकतवर सेना को हराकर इतिहास बदला.

वो मेक्सिको और अमेरिका के लोगों के एक-साथ काम करने की कहानी है.



दो राष्ट्रपति और एक सम्राट 1861

मेक्सिको युद्ध से थक गया था.

सैकड़ों वर्षों तक, स्पेन ने मेक्सिको पर शासन किया था.

कई मेक्सिकन लोगों ने स्पेनिश लोगों से छुटकारा पाने के लिए लड़ते हुए अपनी जानें गंवाई थी.

1821 में स्पेनिश चले गए.

1840 के दशक में, मेक्सिको और अमेरिका के बीच एक नया युद्ध छिड़ गया.

उसमें मेक्सिको ने अपनी आधी जमीन खो दी.

1861 में, आखिर में मैक्सिकन लोग आज़ाद हुए.

अब उनका एक मैक्सिकन राष्ट्रपति था.

उनके राष्ट्रपति, जैपोटेक नामक इंडियन जनजाति से आए थे.

उनका नाम बेनिटो जुआरेज़ था.

बेनिटो मेक्सिको के राष्ट्रपति बनने वाले पहले इंडियन थे.

वो बड़ी गरीबी की हालत में बड़े हुए थे.

वो एक अनाथ थे.

वो अपने एक चाचा के यहां चरवाहे का काम करते थे.

फिर बेनिटो ने कठिन अध्ययन किया.

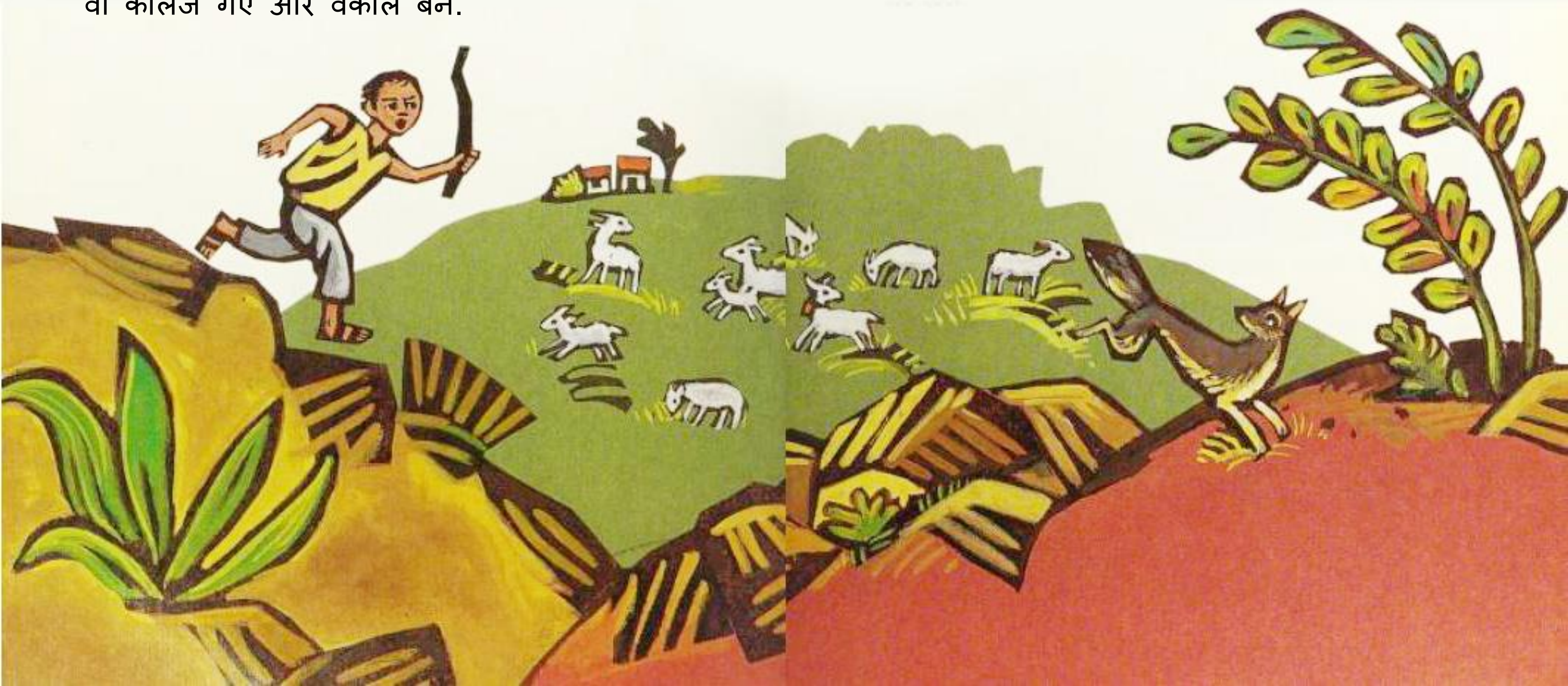
वो कॉलेज गए और वकील बने.

1861 में, बेनिटो जुआरेज मेक्सिको के राष्ट्रपति बने.

उन्होंने साबित कर दिया कि एक गरीब चरवाहा भी शिक्षित हो सकता था और बड़े होकर अपने देश का नेतृत्व कर सकता था.

बेनिटो को उम्मीद थी कि मेक्सिको और अमेरिका दोस्त बनेंगे.

उन्होंने अमेरिका के राष्ट्रपति को पत्र लिखना शुरू किए.



उस समय अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति थे.

बेनिटो जुआरेज के पत्र पाकर वो बहुत खुश हुए.

अब्राहम लिंकन और बेनिटो में बहुत समानता थी.

लिंकन भी गरीब पैदा हुए थे.

वो एक लॉग-केबिन में बड़े हुए थे.

उन्होंने भी खूब पढ़ाई की और फिर बाद में वो एक वकील बने.

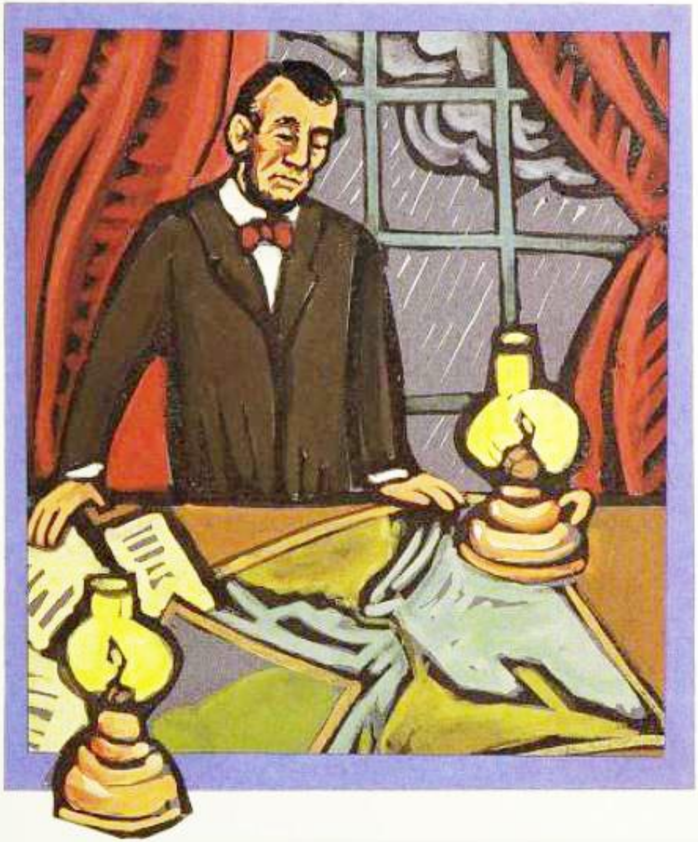
अब अब्राहम लिंकन अपने देश का नेतृत्व कर रहे थे, पर उनके सामने एक और युद्ध था.

उत्तर के राज्य, दक्षिण के राज्यों से लड़ रहे थे.

इस युद्ध को गृहयुद्ध कहते हैं.

लिंकन बहुत चिंतित थे.

वो जानते थे कि फ्रांस के सम्राट, दक्षिण की सहायता के लिए सैनिकों और हथियारों को भेजने के बारे में सोच रहे थे.



फ्रांस की मदद से शायद दक्षिण, गृहयुद्ध जीत जाता.

फिर संयुक्त राज्य अमेरिका, दो देशों में बंट जाता.

फ्रांस के सम्राट का नाम नेपोलियन III था.

उनकी सेना सारे संसार में सर्वश्रेष्ठ थी.

उनके सैनिकों की वर्दी बिल्कुल नई थी.

उनके लम्बे बूट एकदम चमकदार थे.

उनके हथियार घातक थे.

नेपोलियन बहुत लालची था.

वो पूरे लैटिन अमेरिका पर शासन करना चाहता था.

वो यह भी चाहता था कि दक्षिण, गृहयुद्ध जीत जाए.

तब संयुक्त राज्य अमेरिका कमजोर हो जाएगा.

और फ्रांस, दुनिया का सबसे ताकतवर देश बन जाएगा.

नेपोलियन ने मेक्सिको पर हमला करने और कब्जा करने का फैसला किया.

तब वो दक्षिण की मदद के लिए अपनी सेना को सीमा पार ले जा सकता था.

उससे राष्ट्रपति लिंकन चिंतित थे.

और राष्ट्रपति बेनिटो जुआरेज़ भी चिंतित थे.

वे जानते थे कि यदि उनके देशों को स्वतंत्र रहना है तो उन्हें मिलकर काम करना होगा.





प्यूब्ला की लड़ाई

फ्रांसीसी सैनिकों से भरे जहाज, समुद्र पार करके आए

1861 के अंत में उन्होंने अटलांटिक महासागर को पार किया.

वे मेक्सिको में वेराक्रूज़ नामक बंदरगाह पर उतरे.

नेपोलियन ||| ने अपने सैनिकों से, मेक्सिको सिटी पर हमला करने को कहा.

मेक्सिको सिटी, मेक्सिको की राजधानी थी.

वो बेनिटो जुआरेज़ और उनकी सरकार का घर था.

रास्ते में फ्रांसीसी सैनिक, एक गाँव में खाने और सोने के लिए रुके.

मैक्सिकन लोग, फ्रांसीसी सैनिकों से डरते थे.

इसलिए रास्ते में बहुत कम ही लड़ाई हुई.

फ्रांसीसी सैनिकों को लगा कि मैक्सिकन कायर थे.

बेनिटो जुआरेज़ जानते थे कि उनके लोग कायर नहीं थे.

उनके लोग बस लड़ते-लड़ते थक गए थे.

लेकिन उन्हें अब कुछ करना था.

बेनिटो जानते थे कि नेपोलियन उनके स्थान पर किसी फैंसी यूरोपीय राजकुमार को लाना चाहता था.

उससे मैक्सिकन लोगों को मुक्ति नहीं मिलती.

नेपोलियन, फ्रांस के लिए मेक्सिको का सोना-चांदी भी लूटना चाहता था.

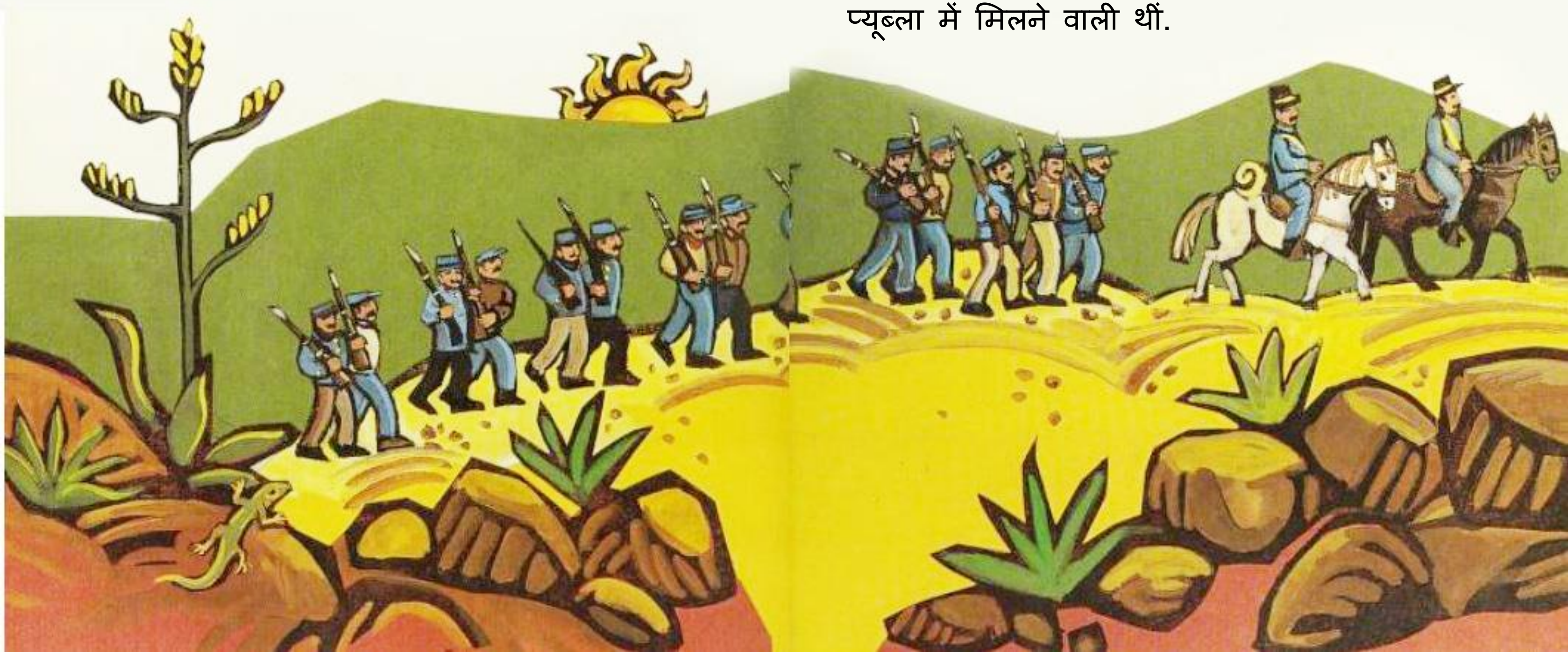
सबसे बुरी बात यह थी कि वो मैक्सिकन जीवन-शैली पर पाबंदी लगाना चाहता था.

लेकिन बेनिटो जुआरेज़ आखिर क्या कर सकते थे?

सैनिकों को प्रशिक्षित करने के लिए उनके पास पैसे नहीं थे. हथियार और गोलियां खरीदने के लिए भी उनके पास धन नहीं था.

फ़्रांसियों को रोकने के लिए बेनिटो सिर्फ एक छोटी सी सेना ही भेज सकते थे.

दोनों सेनाएँ मेक्सिको सिटी के पूर्व में स्थित, एक शहर प्यूब्ला में मिलने वाली थीं.



मेक्सिकोवासियों के पास लगभग 3,000 सैनिक थे.

जबकि फ्रांसीसी सैनिक उनसे दुगने 6,000 थे.

मैक्सिकन सेना ने किसानों से मदद मांगी.

किसानों को कैम्पेसिनो कहा जाता था.

वो पुआल की बनी टोपी और घर पर बनी बनी सैंडल पहनते थे.

उनके पास हथियार के रूप में केवल कृषि उपकरण यानि फावड़े और फसल काटने वाले चाक़ू होते थे.

लेकिन मेक्सिकन लोगों के पास एक बहुत ही महत्वपूर्ण ताकत थी.

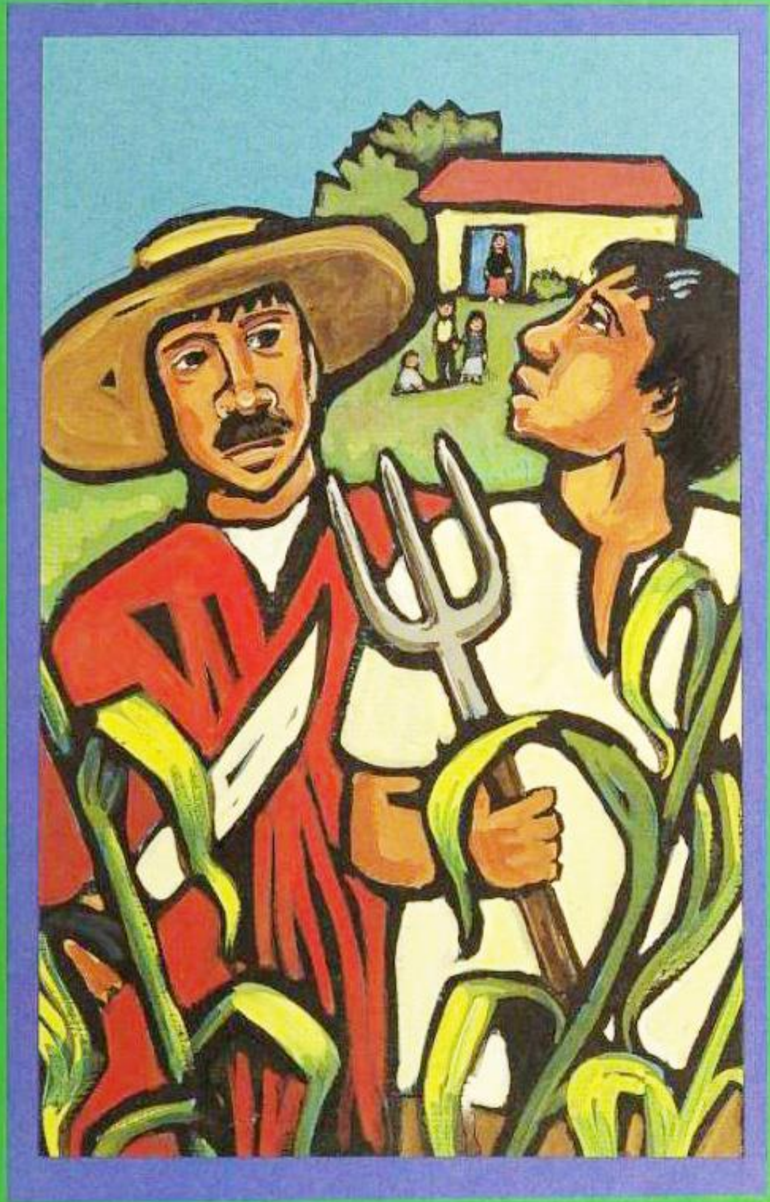
उनका दिल इस युद्ध में था.

वे सिर्फ अपने सोने और चांदी के खजाने की रक्षा नहीं कर रहे थे.

वे अपने घरों और अपने परिवारों की भी रक्षा कर रहे थे.

वे अपनी परंपराओं की भी रक्षा कर रहे थे.

वे उन सभी बच्चों की रक्षा कर रहे थे जो बड़े होकर मैक्सिकन बनने वाले थे.





यह मई 5, 1862 का दिन था - एल सिन्को डे मेयो.

मैक्सिकन सेना जानती थी कि फ्रांस ने उस दिन पुएब्ला पर हमला करने की योजना बनाई थी.

इसलिए भोर के समय ही गिरजाघर की घंटी तेज़ी से बजने लगी.

कैंपसिनो ने फावड़े और धारदार चाकुओं को अपने हाथों में उठाया जिन्हें “माचेस” कहा जाता है.

वे मैक्सिकन सैनिकों से साथ शामिल होने के लिए दौड़ पड़े.

प्यूब्ला के दो किलों के पास कैंपसिनो और कुछ सैनिक, खाइयों में छिप गए.

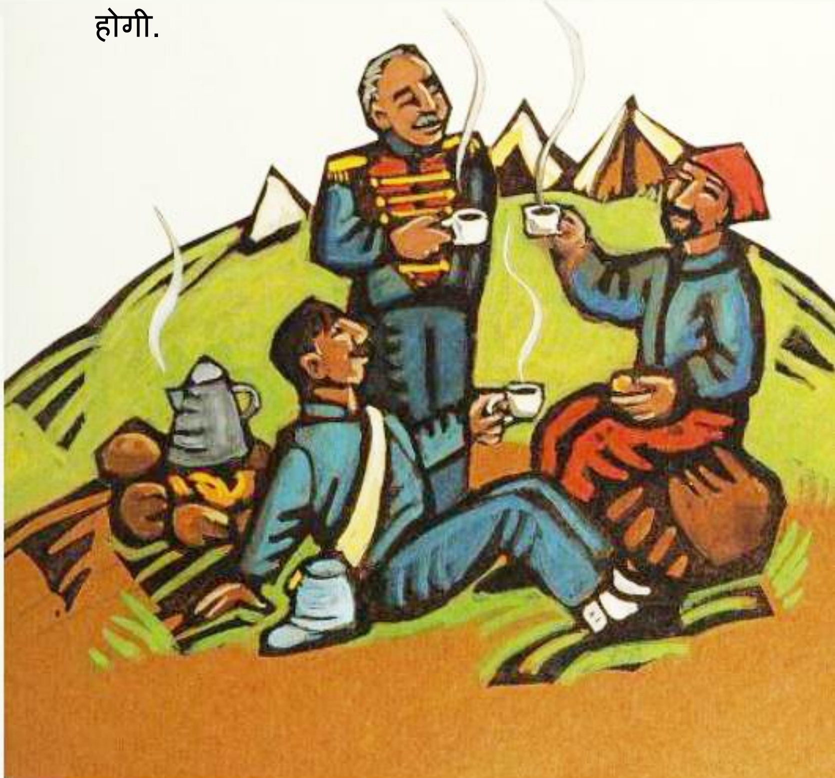
इस बीच, फ्रांसीसी सेना सुबह की कॉफी पीने के लिए रुकी.

उन्हें मैक्सिको के किसी भी गाँव में अभी तक कोई परेशानी नहीं हुई थी.

फिर उन्हें प्यूब्ला में क्यों परेशानी होगी?

वे जानते थे कि वहां एक दयनीय छोटी सी सेना उनकी प्रतीक्षा कर रही होगी.

फ्रांसीसी सैनिकों के लिए वो एक आसान लड़ाई होगी.





साहसपूर्वक, फ्रांसीसी सैनिकों ने किलों पर धावा बोला.

उन्होंने मेक्सिकन लोगों को गोली मारने के लिए पत्थर की दीवारों को तोड़ डाला.

मेक्सिकन लोगों ने वापस गोली चलाई.

उससे सैकड़ों फ्रांसीसी सैनिक घायल होकर नीचे गिर गए.

फिर और अधिक फ्रांसीसी सैनिक दीवारों पर चढ़ने लगे.

उन जवानों को भी मेक्सिकन्स ने गोली मारी.

जल्द ही फ्रांसीसियों ने अपनी अधिकांश गोलियों और तोप के गोलों का इस्तेमाल कर डाला था.

मैक्सिकन की छोटी सेना फ्रांसीसी सैनिकों को पीट रही थी!

यह कैसे संभव हुआ?

अचानक आसमान में गड़गड़ाहट हुई.

बिजली कड़की और तेज़ बारिश होने लगी.

फ्रांसीसी घोड़े कीचड़ में धंसने लगे.

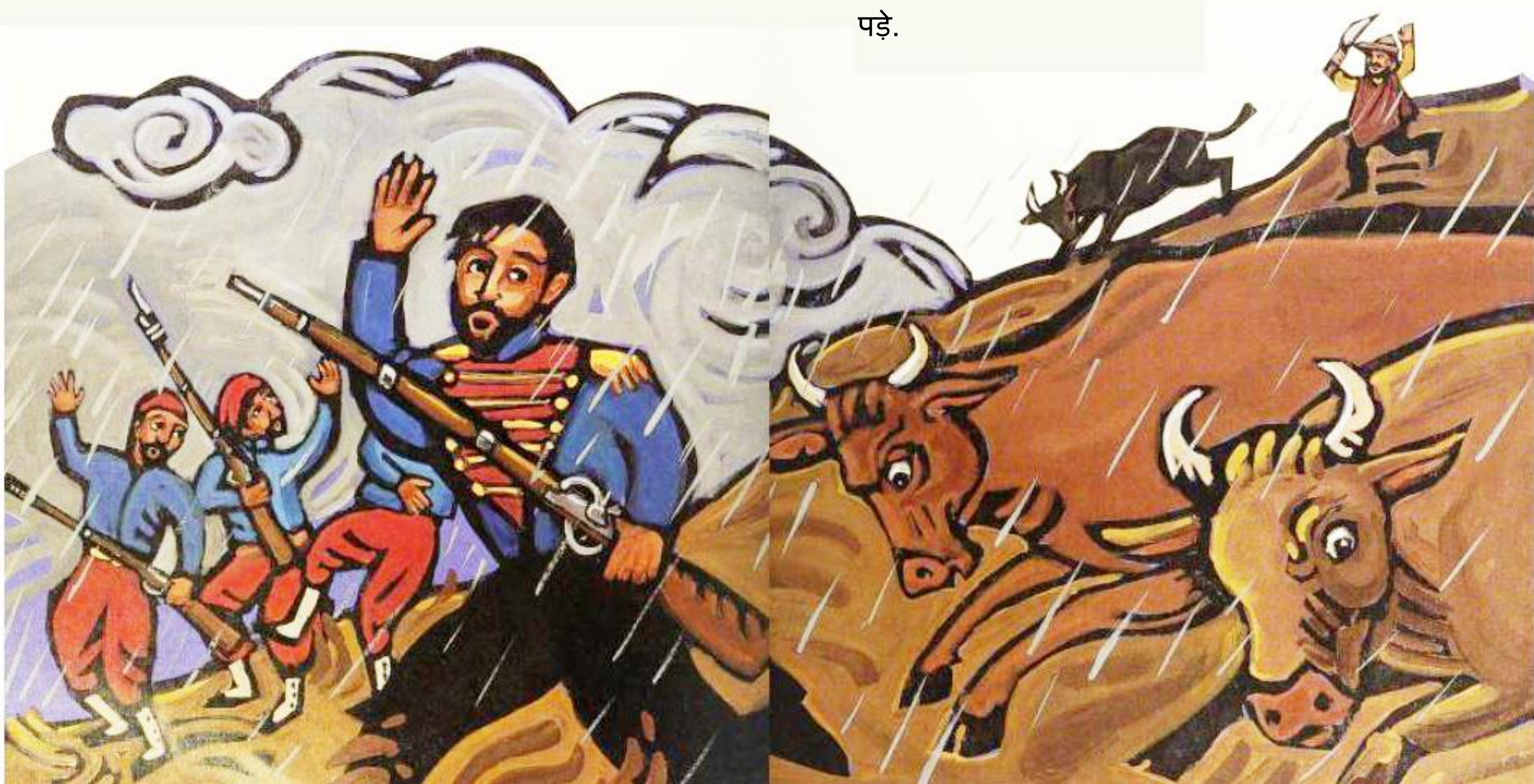
तभी खाइयों में छिपे मेक्सिकन किसानों ने छलांग लगाई और गोलियां बरसायीं.

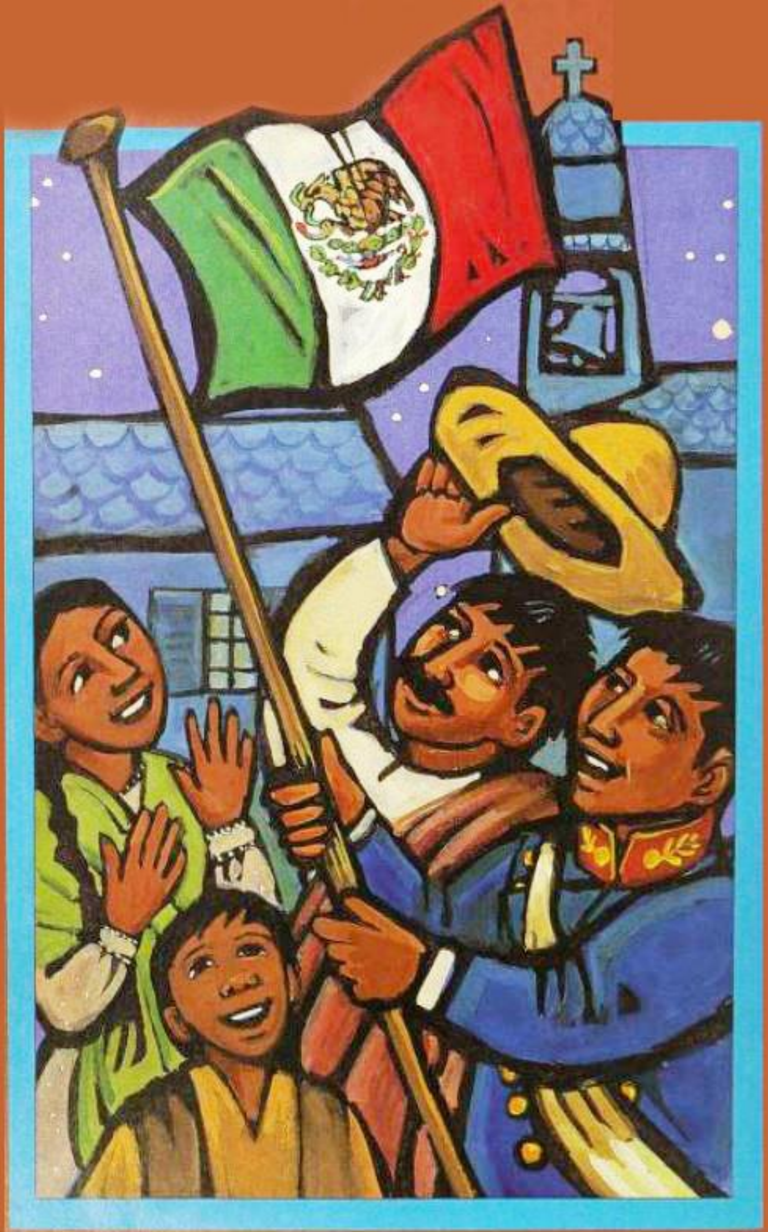
कैम्पेसिनो ने अपने चाकू लहराए और आसपास के मवेशियों को हांका.

मवेशियों ने मैले कीचड़ में फिसलने वाले फ्रांसीसी सैनिकों पर हमला किया.

देर दोपहर तक, फ्रांसीसी लड़ाई हार गए थे.

फिर वे मुड़े और वापस पूर्व की ओर चल पड़े.





पुएब्ला में, रात भर चर्च की घंटियाँ बजती रहीं.

मैक्सिकन किसानों की मदद से मैक्सिकन सैनिकों ने, अपने से दोगुनी बड़ी सेना को हरा दिया था.

उन्होंने एक ऐसी सेना को हराया था जो कई सालों से कोई लड़ाई नहीं हारी थी!

खबर मिलते ही बेनिटो जुआरेज ने जीत को राष्ट्रीय उत्सव घोषित कर दिया.

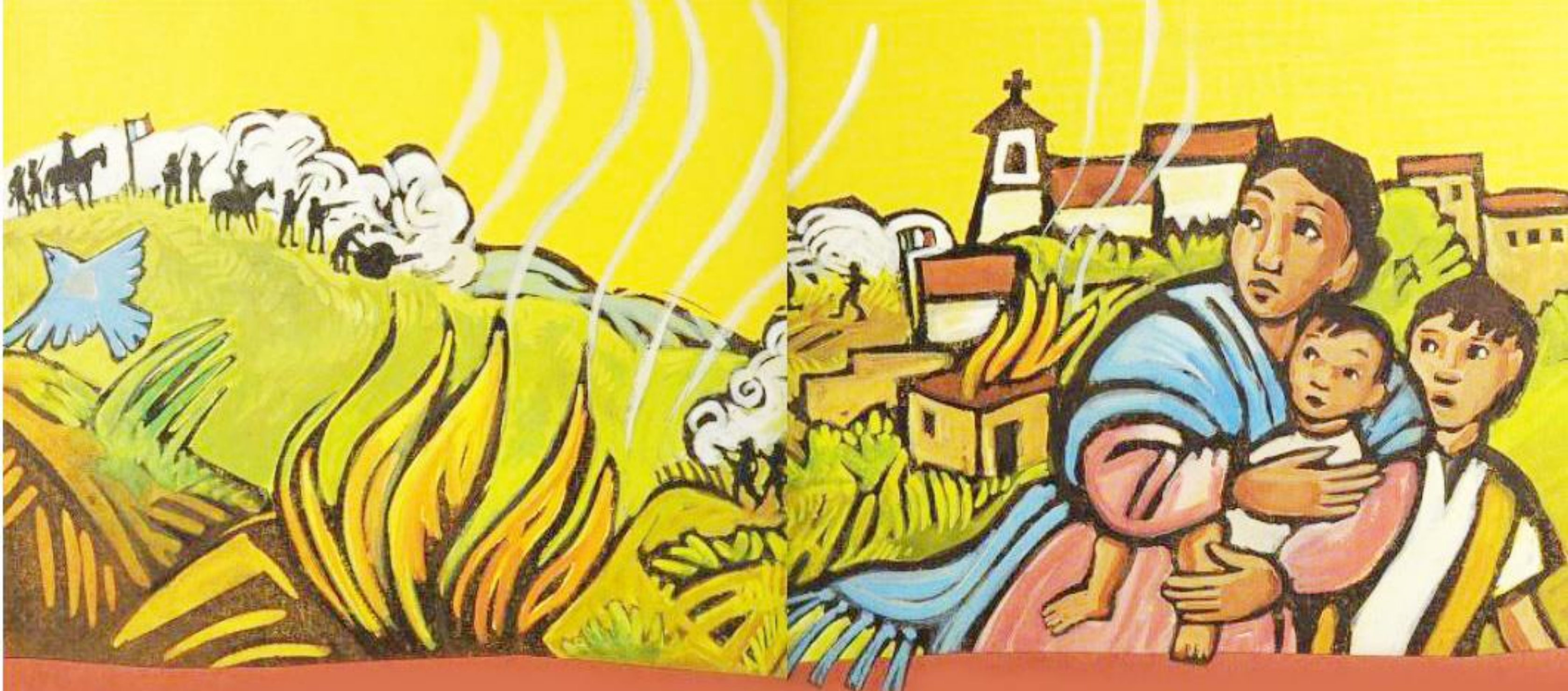
सिन्को डे मेयो के बाद, कई मेक्सिकन लोगों ने खुद को एक नए तरीके से देखा.

लोग चिल्लाए. "मैं मैक्सिको का निवासी हूं!"

अब उन्हें अपने मैक्सिकन होने पर गर्व था.

अब वे आक्रमणकारियों के खिलाफ शक्तिहीन नहीं थे.

वे अपने ही देश पर शासन करने के लिए दृढ़ थे.



मैक्सिकन लोगों को उस दृढ़ संकल्प की जरूरत थी.

फिर नेपोलियन ने 30,000 और फ्रांसीसी सैनिकों को मेक्सिको भेजा.

तीन साल तक मैक्सिकन, फ्रांसीसी सैनिकों से जूझते रहे.

उस दौरान भी, हर पाँच मई को, मैक्सिकन लोगों ने जश्न मनाने के लिए समय निकाला.

उन्होंने पुएब्ला में अपनी जीत को गर्व से याद किया.

उस पर्व ने उन्हें बहादुर बने रहने और अपने दिल से, एक स्वतंत्र मेक्सिको के लिए लड़ने की याद दिलाई.

उन वर्षों के दौरान, संयुक्त राज्य अमेरिका में गृह युद्ध चलता रहा.

दक्षिण, गरीब और कमजोर होता गया.

फ्रांस, दक्षिण की मदद नहीं कर सका.

मेक्सिको को नियंत्रण में रखने के लिए नेपोलियन ने अधिक सैनिक, घोड़े, भोजन और हथियार भेजे.

इसलिए फ्रांस के पास दक्षिण के लिए कोई अतिरिक्त पैसा नहीं बचा.

इस बीच, राष्ट्रपति लिंकन और राष्ट्रपति जुआरेज़ लगातार संपर्क में रहे.

जैसे ही संभव हुआ,अब्राहम लिंकन ने मेक्सिको के लिए बंदूकें और गोलियां भेजीं.

1865 में जब गृहयुद्ध समाप्त हुआ, तो लिंकन ने अपने सैनिकों को सीमा पर लड़ने भेजा.

उससे नेपोलियन चिंतित हुआ.

संयुक्त राज्य अमेरिका, मेक्सिको के साथ एक-साथ खड़ा था.

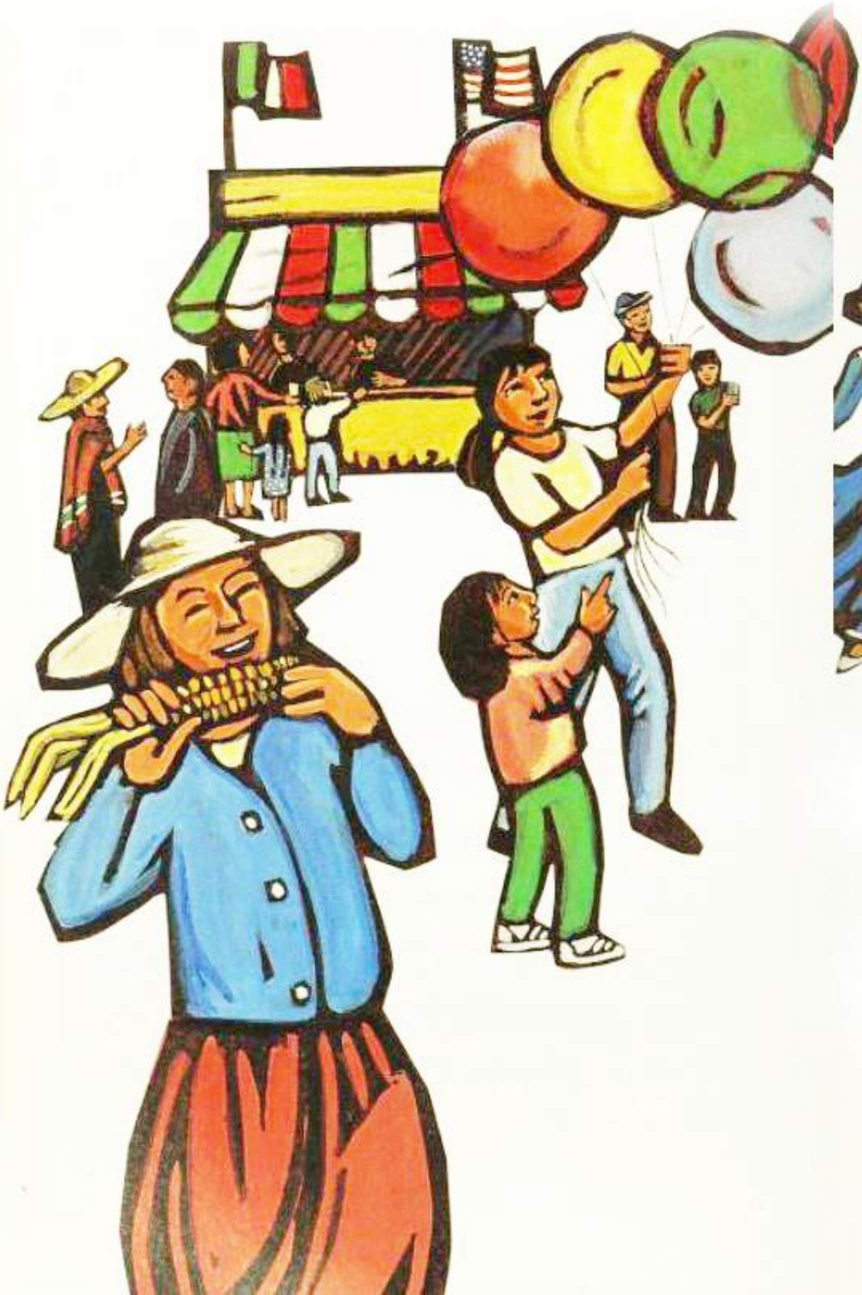


क्या नेपोलियन इस युद्ध को जारी रखने वाला था?

नहीं, उसने फैसला किया.

अंत में, 1867 में, फ्रांसीसी सैनिकों ने मेक्सिको छोड़ दिया.

फिर कभी किसी यूरोपीय सेना ने, अमेरिका पर आक्रमण नहीं किया.





उत्सव या पार्टी

5 मई, 1862 से, मैक्सिकन और अमेरिकी अच्छे पड़ोसी रहे हैं.

साथ में, उन्होंने कई युद्धों में मिलकर आजादी की लड़ाई लड़ी है.

हर साल, सीमा के दोनों ओर, लोग सिन्को डे मेयो पर्व मनाते हैं.

सबसे बड़ा उत्सव पुएब्ला, मेक्सिको में होता है.

लोग जल्दी उठते हैं और सिन्को डे मेयो में, हीरो के बुलेवार्ड पर जाते हैं.

वहां, वे परेड देखने के लिए कुर्सियाँ किराए पर लेते हैं.

वहां बहुत शोरगुल और भीड़ होती है.

झांकी में सूरज नाव चलाता है. कैंडी, साबुन के बुलबुले और दूरबीन बेचते हुए व्यापारी चिल्लाते हैं.

"सोम्ब्रेरो!" वे चिल्लाते हैं, "पुआल की बनी टोपियां!"

सभी ओर चमकीले रंगों में कागज के छाते होते हैं.

गुब्बारे बेचने वाले गुब्बारों के बड़े-बड़े बादल लाते हैं.







दोपहर तक परेड शुरू होती है.

रंग-बिरंगी झांकियां मैक्सिको के इतिहास को दर्शाती हुई गर्व से गुजरती हैं.

स्कूल बैंड ऐसे गाने बजाते हैं जिनका उन्होंने महीनों तक अभ्यास किया होता है.

सैनिक, सीधी लाइन में मार्च करते हैं.

बच्चे, किसानों यानि कैंपसिनो की तरह कपड़े पहनते हैं.

वे चाकू और फावड़े लेकर चलते हैं.

लोग ताली बजाते हैं और रंग-बिरंगी कंफेटी उछालते हैं.

वे परेड पर गुलाबी, नीले, हरे, बैंगनी और पीले कागज के चमकीले छोटे-छोटे टुकड़े बरसते हैं.

उस रात प्रसिद्ध युद्ध के मैदान पर एक शो होता है.

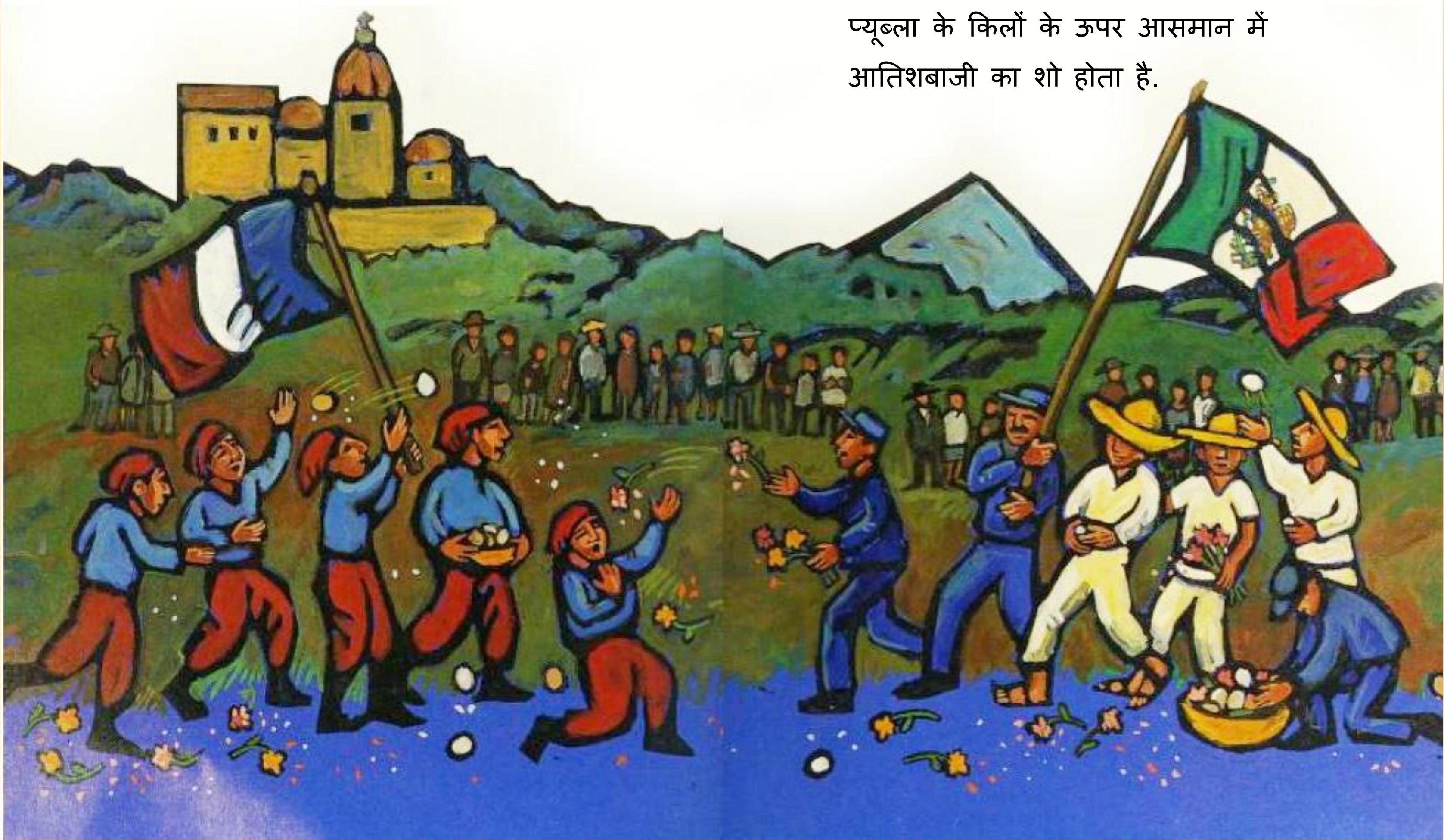
लोग सैनिकों की तरह तैयार होते हैं और पुएब्ला की लड़ाई का प्रदर्शन करते हैं.

वे गोलियों और तोप के गोलों का इस्तेमाल नहीं करते हैं.

इसके बजाये, वे एक दूसरे पर फूल फेंकते हैं.

वे कंफ़ेटी से भरे अंडे के छिलके फेंकते हैं.

प्यूब्ला के किलों के ऊपर आसमान में आतिशबाजी का शो होता है.





संयुक्त राज्य अमेरिका में भी सिन्को डे मेयो, एक बड़ा उत्सव बन गया है.

पर हमेशा ऐसा नहीं था.

1960 के दशक में, मैक्सिकन-अमेरिकी अपनी संस्कृति को साझा करना चाहते थे.

उन्हें अपनी मेक्सिकन जड़ों पर गर्व था.

उन्होंने सिन्को डे मेयो का जश्न मनाना शुरू किया.

उन्होंने पड़ोसियों को मस्ती में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया.

अब अमरीकी के तमाम शहरों में 5 मई को परेड आयोजित की जाती है.

कुछ लोग मैक्सिकन झंडे के लाल, सफेद और हरे रंग के कपड़े पहनते हैं.

अन्य लोग मेक्सिको के विभिन्न राज्यों के पारंपरिक परिधान पहनते हैं.



परिवार पारंपरिक मेक्सिकन भोजन परोसते हैं.

लोग “टैकोस” और “एनचिलाडस” और मसालेदार स्नैक्स खाते हैं.

सबसे प्रसिद्ध व्यंजनों में से एक, जिसे "मोल" कहा जाता है वो सीधा पुएब्ला से आता है.

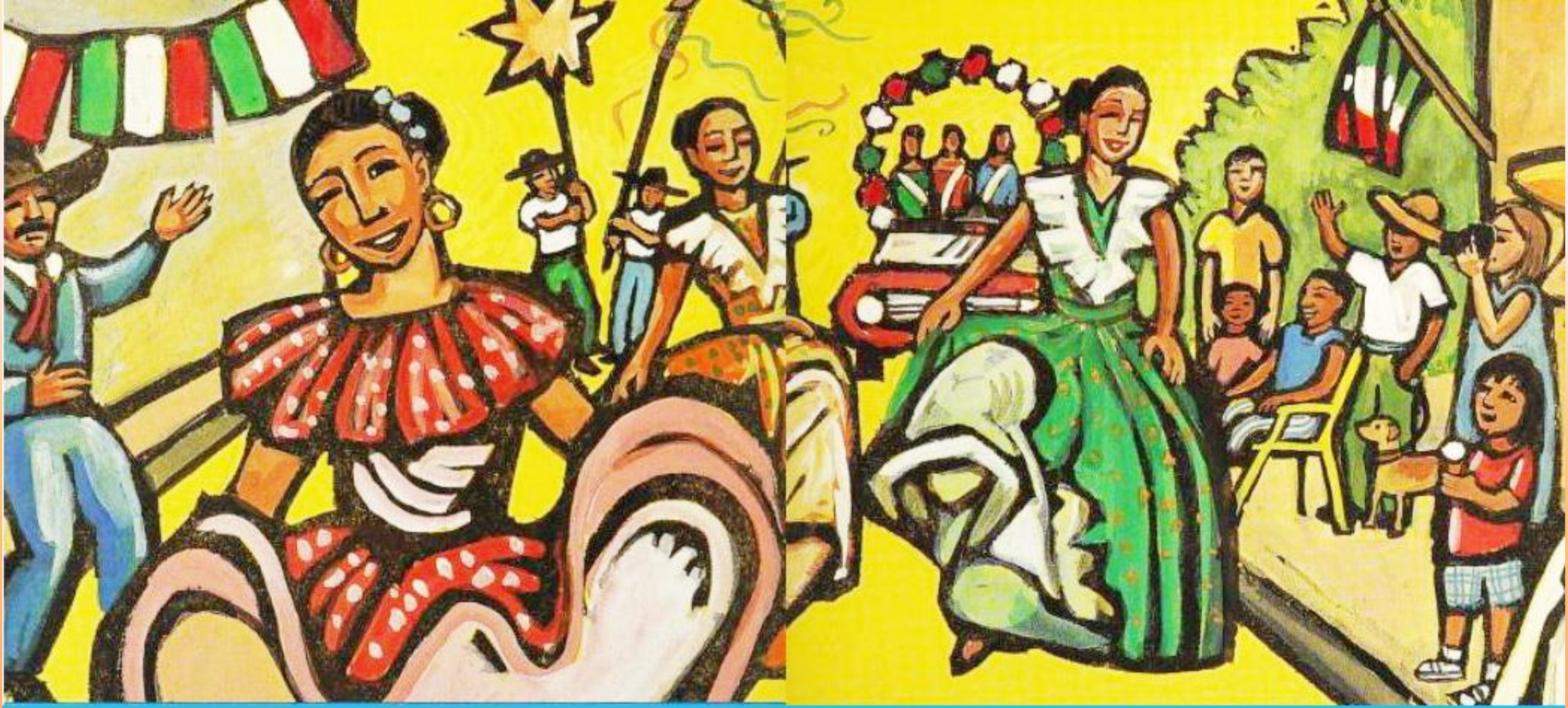
यह 40 सामग्रियों से बनी चटनी होती है, जिसमें मिर्च, मसाले और चॉकलेट मिली होती है.

बच्चे कैंडी, फल और छोटे-छोटे खिलौनों से भरे पिनाटा (कागज के डिब्बे) फोड़ते हैं.

लोग संगीत वादकों के गिटार और तुरहियों पर नृत्य करते हैं.

दिन आतिशबाजी, लेजर लाइट-शो और संगीत कार्यक्रमों के साथ समाप्त होता है.





सिन्को डे मेयो वाले दिन मैक्सिकन और अमेरिकी एक साथ जश्न मनाते हैं.

वे उस छोटी सेना का जश्न मनाते हैं जिसने दुश्मन की बड़ी सेना पर जीत हासिल की थी.

लोग मैक्सिकन भोजन और इतिहास और संगीत का जश्न मनाते हैं.

लोग अच्छे पड़ोसियों का जश्न मनाते हैं.

एल सिन्को डे मेयो! चिरायु हो!

सिन्को डे मेयो, जिंदाबाद!

स्पेनिश शब्द

campesinos कैम्पेसिनो (KAHM-Pay-SEE-nohs): कृषि मज़दूर

Cinco de Mayo सिन्को डू मेयो (SEENK-Oh DAY MY-Oh): मई की पांचवां दिन

fiesta : एक उत्सव या पार्टी

machetes (mah-CHEH-tays): खेतों में फसलों को काटने के लिए बड़ा चाकू

mariachi (MAHR-ee-AH-chee): ऐसा संगीतकार जो एक पारंपरिक मैक्सिकन पोशाक पहनता है और एक बैंड में उत्सव संगीत बजाता है

mole (मोह-ले): मांस और मैक्सिकन व्यंजन के लिए एक मसालेदार चटनी

pinatas (पीन-आताह्स): रंगीन कागज़ के डिब्बे जो खिलौनों और कैंडी से भरे होते हैं, जिन्हें बच्चे उत्सव में तोड़ते हैं

serapes (सेहर-ऑ-पेज़): कंधों पर पहना जाने वाला ऊनी लबादा

sombreros (सोम-ब्रेह-रोह्स): टोपी जो कपड़े या पुआल से बनी होती हैं और अक्सर चौड़ी होती हैं